OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 6

दादियों की स्मृतियां आज भी नहीं हो पायीं ओझल

ओम शान्ति मीडिया कार्यालय,आनंद भवन,शांतिवन में दादी हृदयमोहिनी जी व दादी जानकी जी के आगमन पर उन्हें शिव अवतरण एवं ओम शान्ति मीडिया पत्रिका के बारे में बताते हुए सम्पादक ब्र.कु. गंगाधर भाई। साथ में मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष भ्राता करुणा भाई तथा ओम शान्ति मीडिया के सभी सदस्य।

- अपने परिवार से मिलीं परिवार की मुखिया
- प्रभु प्रेम में लवलीन दादियों ने परिवार में बांटा प्यार
- दादियां मुखिया नहीं, सखियां बनकर मिलीं
- अपनों ने अपनों से मिलने का आनंद लिया यहां
- प्रेम, स्नेह और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति को निहारा सभी ने
- दादी हृदयमोहिनी ने मीठी दृष्टि देकर सबके हृदय को मोह लिया
- दादी में सरलता और समानता का सेतु पाया
- राजा जनक की भांति जीवन का मूल मंत्र दिया दादी जानकी ने

28-01-2016 में दादी जानकी के 100वें जन्मदिन के निमित्त ओम शान्ति मीडिया कार्यालय,आनंद भवन,शांतिवन में आयोजित कार्यक्रम में तत्कालिन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी तथा तत्कालिन अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी(दादी गुल्ज़ार) का आना हुआ। वहाँ पर मधुबन के मुख्य भाई-बहनों के साथ दादी जानकी का जन्म दिन बड़े ही उमंग-उत्साह से मनाया गया। दादी जानकी जी ने कहा कि परमात्म संदेश हर जन तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है मीडिया। पर हमारी आज संसार की जो मीडिया है, उससे ये हमारे स्पीरिचुअल मीडिया बहुत ही अलग तरह से सत्य को लोगों तक पहुंचाता है। कहते हैं सत्य अपने आप में एक शक्ति है और सत्यता की शक्ति हरेक के दिल तक पहुंचेगी तो अंधकार तो मिटना ही है। उसके लिए दादी जी ने कहा कि पत्रिका का नाम ही है 'ओम शान्ति मीडिया', तो दादी ने उसी पर और कारगर रीति से दुनिया के सामने पहुंचाने के सम्बंध में बहुत सारगर्भित बात करते हुए कहा कि एक बार ओम शांति बोलने से लाइट हो जाते हैं, दूसरी बार ओम शांति बोलने से अपने अंदर माइट अर्थात् शक्ति आ जाती है और तीसरी बार ओम शांति बोलने से एवरीथिंग राइट हो जाता है। आगे दादी ने कहा कि कलम में ताकत देने का काम कमल फूल समान जीवन है। जब हमारा जीवन व्यर्थ से मुक्त होगा तभी हम कमल फूल के समान अपने को बना सकेंगे और फिर जो परमात्मा का संदेश है वो जन-जन तक पहुंचाने में कारगर बनेगा।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि आज मीडिया वालों से मिलकर हमें बहुत खुशी है। अब समय आया है कि जन-जन तक ये संदेश पहुंचे कि ब्रह्माकुमारियां क्या कर रही हैं। उनका उद्देश्य क्या है, ये स्पष्ट रूप में जनमानस तक पहुंचना ज़रूरी है। चारों तरफ ये आवाज़ निकले कि हमारा बाबा आ गया। अब वो दिन दूर नहीं जब भारत पुनः विश्व गुरू बनेगा।

दोनों दादियों ने पूरे ओम शान्ति मीडिया कार्यालय को देखा और हर चेम्बर में जाकर पूर्णतः जानकारी ली तथा ओम शान्ति मीडिया से जुड़े सभी भाई-बहनों से प्यार से मिलीं। दादियां करीब तीन घंटे कार्यालय में रहकर सब के साथ बाबा के साथ के संस्मरण साझा किये और एक रुहानियत भरे माहौल में दादियों को नज़दीक पाकर, उनसे रूबरू होकर सभी बहुत ही दिल से गद्गद् हुए।

इस अवसर पर मधुबन के राजयोगी ब्र.कु. सूर्य, मल्टीमीडिया चीफ राजयोगी ब्र.कु. करुणा, शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, ओम शान्ति मीडिया के सम्पादक राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर, ओम शान्ति मीडिया के सभी सदस्यों व अन्य मुख्य भाई-बहनों सहित नेपाल क्षेत्र की मुख्य निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी, रशिया सेंटपीटर्सबर्ग क्षेत्र की मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी तथा मिडल ईस्ट में बेरूत की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. अरुणा दीदी भी उपस्थित थीं।

» सच्चे प्रेम की परख «

- ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

प्यार एक बहुत सुन्दर चीज़ थी। एक एनर्जी थी। जिस एनर्जी से व्यक्ति खुद भी एनर्जाइस्ड हो जाता था। लेकिन प्यार के कई लेवल हैं। एक है शारीरिक प्यार, दूसरा है दिव्य प्यार, और तीसरा है परमात्म प्यार। ये तीन प्यार हैं। जो परमात्म प्यार है वो हमें ऊपर उठाता है और जो शारीरिक प्यार है वो व्यक्ति को गिराता है। यह एक बन्धन बन जाता है। और ये बन्धन जो है कभी-कभी घुटन का अनुभव कराता है। और इस घुटन के कारण ब्रेकअप होता है क्योंकि कोई भी इंसान बंधन में नहीं रहना चाहता। हर व्यक्ति आज़ाद जीवन जीना चाहता है। ऐसा नहीं होता कि सामने वाले सोचे कि जैसा मैं कहूँ वो वैसा ही करे। मैं जैसा चाहूँ वैसा ही होना चाहिए। तो वहाँ प्यार के अन्दर घुटन महसूस होने लगती है। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि हम मनुष्यों से प्यार करें ही नहीं, उनसे भी प्यार करें। लेकिन वो प्यार शारीरिक या वासनायुक्त न हो। वो प्यार जितना दिव्य होगा, जितना हम एक-दूसरे को फुल फ्रीडम देंगे, दिव्य प्यार उसको कहते हैं जहाँ कोई भी प्रकार की कमी नहीं है। दिव्य प्यार माना एक सोल लेवल पर लव है।

वो एक फिजिकल लेवल पर लव है। लेकिन ये भी है कि हर किसी को ये भी नहीं पता कि सोल क्या है। जैसे कहते हैं ना कि ये मेरी सोलमेट है। तो सोलमेट अगर है तो सोलमेट का प्यार भी वैसा होना चाहिए। उसको दिव्य प्यार कहते हैं। लेकिन फिजिकल लव माना एक लस्ट(वासना) हो गया। तो वो एक बहुत निम्न कक्षा का प्यार हो गया। बहुत नीचे का प्यार हो गया। लोग जो बहुत कुछ सोचते थे कि इसमें बहुत कुछ प्राप्ति होगी लेकिन इसमें कुछ नहीं है। तो फिर व्यक्ति को लगता है कि फिर क्या है? तो इसीलिए वहाँ से ब्रेकअप। वहाँ से उब जाते हैं। फिर एक-दूसरे की कमी-कमज़ोरी दिखाई देने लगती है कि नहीं मेरी ये बात इससे मैच नहीं हो रही है। तो हर छोटी-छोटी बात में भी जो एक्सेप्टेंस लेवल (स्वीकृति स्तर) था वो धीरे-धीरे खत्म होता जाता है। और इसीलिए जहाँ एक्सेप्टेंस खत्म हो गया वहाँ से फिर सोचते हैं कि ये मेरे लिए नहीं है, या वो मेरे लिए नहीं है तो वहाँ से दूर होने लगते हैं।

जो पहले माना हर घंटे फोन होता था, हर घंटे मन होता था कि उसके बारे में हम जाने, उसके बारे में हम समझें। फिर उसके बाद सारे दिन में एक फोन, तो वहाँ फिर लगता है कि ये व्यक्ति अवॉइड कर रहा है मुझे, इग्नोर कर रहा है। और जहाँ ये इग्नोर कर रहा है ये फीलिंग आई तो नैचुरल है उसको लगता है कि मैं भी इसको इग्नोर करूँ। उसका भी इगो है। तो वास्तव में अगर देखा जाये तो जहाँ इगो है ना वहाँ लस्ट भी है। वहाँ फिर गुस्सा भी है, क्रोध भी आता है। तो यहाँ से सब इंटरकनेक्टेड हैं। पहले जब लोग होते थे तो उनका एक-दूसरे से इतना दिल नहीं भरता था। परन्तु अब जल्दी ही दिल भर जाता है।

पहले जब प्यार होता था ना तो पहले ऐसे प्यार नहीं होता था जैसे आजकल होता है। अपरिपक्व उम्र में किसी को पसंद करने लगते हैं, किसी की तरफ आकर्षित होते हैं, और वो आकर्षण जो है वो एक प्रकार का इल्यूशन कहो या हेल्यूनेशन(मोह माया) कहो। बस कहते हैं कि लव हो गया। लव की परिभाषा मालूम नहीं है कि लव बंधन नहीं है। लव फ्रीडम है। एक जैसे खुला आकाश देते हैं एक-दूसरे को उड़ने के लिए, आगे बढ़ने के लिए। जहाँ हम सपोर्ट बनते हैं वहाँ हम रोकने का प्रयत्न नहीं करते कि नहीं मेरे हिसाब से चलें। मेरे हिसाब से ही करना चाहिए। ये बंधन नहीं होता है प्यार में। तो प्यार का मतलब है फ्रीडम। आजादी है, एक सपोर्ट हम बनते हैं। और सपोर्ट बन करके हम उनको आगे बढ़ाते हैं और वो सपोर्ट बन करके हमें आगे बढ़ाते हैं। ये अंडरस्टैंडिंग होती है।

राजगढ़-ब्यावरा(म.प्र.)। त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित 'सर्व धर्म समभाव सम्मेलन' में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब्र.कु. बाबूलाल,मा.आबू, गायत्री परिवार से स्वभाव आचार्य, जिला कांग्रेस महामंत्री राशिद जमील, पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, सिक्ख धर्म से इंद्रजीत सिंह तथा ब्र.कु. मधु बहन।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- - 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये,
आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या
बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।